प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर के वैज्ञानिकों ने विकसित की डंकरहित मधुमक्खी को पालने की तकनीक

पंतनगर। १२ अक्टूबर, २०१७। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों ने डंकरहित मधुमक्खी, जिसे डामर मधुमक्खी भी कहते हैं, को पालने की तकनीक विकसित कर ली है। विभाग की वैज्ञानिक एवं मधुमक्खी पालन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र पर सहायक निदेशक, डा. पूनम श्रीवास्तव, ने बताया कि डंकरहित मधुमक्खी (*टेटरागोनुला इरीडीपेनिस*) भी भारतीय मौन एवं इटालियन मौन की भांति एक सामाजिक कीट है। उत्तर भारत में यह पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, गुजरात, ओडिशा, उत्तराखण्ड तथा उत्तर पूर्वी एंव दक्षिण भारत के सभी राज्यों में पुराने पेड़ों की खोखल एवं मकान की दीवारों की खोल में पाई जाती है। दक्षिण भारतीय राज्यों में इसके लिए जलवायु अनुकूल होने के कारण विगत कई वर्षों से इसका पालन पेटिकाओं में किया जा रहा है। डामर मधुमक्खी की शहद उत्पादन क्षमता यद्यपि इटालियन एवं भारतीय मौन की अपेक्षा कम है परन्तु, इससे प्राप्त शहद की औषधीय गुणवत्ता काफी अधिक सिद्ध हुई है, जिसके कारण इसका मूल्य भी सामान्य शहद की अपेक्षा ८ से १० गुना अधिक है। उन्होंने आगे बताया कि विश्वविद्यालय में विगत कई वर्षों से डामर मधुमक्खी पालन पर किये जा रहे अनुसंधान के फलस्वरूप उत्तर भारत में इस प्रजाति को पेटिकाओं में पालन किये जाने की तकनीक विकसित कर ली गई है। उनके द्वारा यह भी आशा व्यक्त की गई कि डामर मधुमक्खी पालन को किसानों द्वारा व्यवसायिक रूप से अपनाने हेतु अगले वर्ष तक सम्पूर्ण तकनीक उपलब्ध करा दी जायेगी। डंकरहित होने के कारण इस प्रजाति का पालन महिलाओं द्वारा भी आसानी से किया जा सकता है। शहद के अतिरिक्त डामर मधुमक्खी से पराग एवं प्रोपोलिस भी प्राप्त किया जा सकता है। विभिन्न फसलों जैसे सूरजमुखी, सरसों, अरहर, लीची, आम, अमरूद, नारियल, कॉफी, कद्दू वर्गीय सब्जियां आदि में परागण क्रिया कर उत्पादन वृद्धि में भी इस मधुमक्खी का महत्वपूर्ण योगदान है। निदेशक अनुसंधान केन्द्र, डा. एस.एन. तिवारी, द्वारा बताया गया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित तकनीक द्वारा डामर मधुमक्खी पालन से बहुउपयोगी शहद का उत्पादन कर किसानों द्वारा अपनी आय में वृद्धि की जा सकती है।

विश्वविद्यालय में ६-९ अक्टूबर को आयोजित १०२वें अखिल भारतीय किसान मेले के अवसर पर किसानों की जानकारी हेतु पहली बार मधुमक्खी पालन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र पर डा. पूनम श्रीवास्तव एवं डा. एम.एस. खान, प्राध्यापक कीट विज्ञान, द्वारा किसानों को मधुमक्खी पालन के साथ-साथ डंकरहित मधुमक्खी पालन द्वारा शहद उत्पादन एवं फसलोत्पादन में अन्य परागणकर्ता लाभदायक कीटों का योगदान एंव सरंक्षण की जानकारी दी गई। डामर मधुमक्खी पालन में रूचि लेते हुए किसानों द्वारा भी इसे अपनाये जाने हेतु उत्साह व्यक्त किया गया।

डंकरहित डामर मधुमक्खी।